

मिठाईवाला - ले. भगवतीप्रसाद वाजपेयी

संवाद - 4 (आ)

- सो कैसे? वह भी बताओ।
- अब व्यर्थ में उन बातों की चर्चा क्यों करूँ? उन्हें आप जाने ही दें। उन बातों को सुनकर आपको दुःख ही होगा।
- जब इतना बताया है, तब और भी बता दो। मैं बहुत **उत्सुक** हूँ। तुम्हारा हर्जा न होगा। और भी मिठाई मैं ले लूँगी।
- मैं भी अपने नगर का एक **प्रतिष्ठित** आदमी था। मकान, व्यवसाय गाड़ी-घोड़े, नौकर-चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे-छोटे दो बच्चे भी थे। मेरा वह सोने का संसार था। बाहर **सम्पत्ति** का वैभव था, भीतर सांसारिक सुख का। स्त्री **सुन्दर** थी, मेरा प्राण थी। बच्चे ऐसे सुन्दर थे, जैसे सोने के **सजीव** खिलौने। उनकी अठखेलियों के मारे घर में **कोलाहल** मचा रहता था। समय की गति! विधाता की लीला! अब कोई नहीं है। बहन, प्राण निकाले ही नहीं निकलते। इसलिए अपने उन बच्चों की **खोज** में निकला हूँ। वे सब **अन्त** में होंगे तो यहीं कहीं। आखिर कहीं न कहीं जन्मे होंगे। उस तरह रहता तो घुल-घुलकर मरता। इस तरह सुख-संतोष के साथ मरूँगा। इस तरह के जीवन में कभी-कभी अपने उन बच्चों की एक झलक-सी मिल जाती है। ऐसा जान पड़ता है, जैसे वे इन्हीं में उछलकर हँस-खेल रहे हैं। पैसों की **कमी** थोड़े ही है। आपकी **दया** से पैसे तो काफी हैं। जो नहीं है, इस तरह उसीको पा जाता हूँ।
- अम्मां, मिठाई!
- मुझसे लो! अब इस बार ये पैसे न लूँगा।
- अरे-अरे न-न, अपने पैसे लिए जा भाई।

1. उपर्युक्त पाठांश में दिये गए **मोटे टाइपवाले** शब्दों के लिए विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।
2. अब पाठांश में दिये गए मोटे टाइप वाले पूर्ण वाक्यों का काल बदलकर लिखिए।
जैसे - मैं बहुत **उत्सुक** हूँ। मैं बहुत **उत्सुक** था।